॥ श्री लक्ष्मी चालीसा (पूर्ण) ॥

ॐ श्रीं महालक्ष्म्यै नमः

Full Disclaimer

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji
"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ श्री लक्ष्मी चालीसा (पूर्ण)॥

॥ दोहा ॥

मातु लक्ष्मी करि कृपा, करो हृदय में वास।
मनोकामना सिद्ध करि, पुरवहु मेरी आस॥

॥ चौपाई ॥

सिंधु सुता मैं सुमिरौं तोही।
ज्ञान बुद्धि विद्या दे मोही॥
तुम समान नहि कोउ उपकारी।
सब विधि पुरवहु आस हमारी॥
जय जय जगत जननि जगदम्बा।
सबकी तुम ही हो अवलम्बा॥
तुम ही हो घट घट की वासी।
विनती यही हमारी खासी॥
जगजननी जय सिंधु कुमारी।
दीनन की तुम हो हितकारी॥
विनवौं नित्य तुम्हहि महारानी।
कृपा करो जग जननि भवानी॥
केहि विधि स्तुति करौं तिहारी।
सुधि लीजै अपराध बिसारी॥
कृपा दृष्टि चितवो मम ओरी।
जगजननी विनती सुन मोरी॥
ज्ञान बुद्धि जय सुख की दाता।
संकट हरौ हमारी माता॥
क्षीर सिंधु जब विष्णु मथायो।
चौदह रत्न सिंधु में पायो॥
चौदह रत्न में तुम सुखरासी।
सेवा कियो प्रभु बनि दासी॥
जब जब जन्म जहाँ प्रभु लीन्हा।

रूप बदल तहँ सेवा कीन्हा ॥
स्वयं विष्णु जब नर तनु धारा ।
लीन्हेउ अवधपुरी अवतारा ॥
तब तुम प्रकट जनकपुर माहीं ।
सेवा कियो हृदय पुलकाहीं ॥
अपनायो तोहि अन्तर्यामी ।
विश्व विदित त्रिभुवन की स्वामी ॥
तुम सम प्रबल शक्ति नहि आनी ।
कहँ लगि महिमा कहौं बखानी ॥
मन क्रम वचन करै सेवकाई ।
मन इच्छित वांछित फल पाई ॥
तजि छल कपट और चतुराई ।
पूजहिं विविध भाँति मन लाई ॥
और हाल मैं कहौं बुझाई ।
जो यह पाठ करे मन लाई ॥
ताको कोई कष्ट न होई ।
मन इच्छित पावै फल सोई ॥
त्राहि त्राहि जय दुःख निवारिणी ।
त्रिविध ताप भव बंधन हारिणी ॥
जो चालीसा पढ़े पढ़ावे ।
ध्यान लगाकर सुनै सुनावै ॥
ताको कोई रोग न सतावै ।
पुत्र आदि धन संपत्ति पावै ॥
पुत्रहीन अरु संपत्ति हीना ।
अंध बधिर कोढ़ी अति दीना ॥
विप्र बोलाय कै पाठ करावै ।
शंका दिल में कभी न लावै ॥
पाठ करावै दिन चालीसा ।
ता पर कृपा करैं गौरीसा ॥
सुख संपत्ति बहुत सी पावै ।
कमी नहीं काहू की आवै ॥

तेहि सम धन्य और नहि दूजा ॥
प्रतिदिन पाठ करै मन माहीं ।
उन सम कोइ जग में कहूँ नाहीं ॥
बहुविधि क्या मैं करौं बड़ाई ।
लेय परीक्षा ध्यान लगाई ॥
करि विश्वास करै व्रत नेमा ।
होय सिद्ध उपजै उर प्रेमा ॥
जय जय जय लक्ष्मी भवानी ।
सब में व्यापित हो गुण खानी ॥
तुम्हरो तेज प्रबल जग माहीं ।
तुम सम कोउ दयालु कहूँ नाहीं ॥
मोहि अनाथ की सुधि अब लीजै ।
संकट काटि भक्ति मोहि दीजै ॥

॥ दोहा ॥

त्राहि त्राहि दुःख हारिणी, हरौ वेगि सब त्रास ।
जयति जयति जय लक्ष्मी, करो शत्रु का नाश ॥

Hargharpanditji
"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"